भारत के उत्तरी सीमा की विक्षोभजनित चिन्ताएँ एवं नेपाल

भारत और नेपाल का संबंध अत्यंत प्राचीन है। धार्मिक और पौराणिक साहित्य के आधार पर यह कहा जा सकता है कि वैदिक और पौराणिक काल के पूर्व प्रागैतिहासिक काल से भारत एवं नेपाल एक दूसरे से जुड़े रहे हैं। भारत और नेपाल के सम्बंध की प्राचीनता का निर्धारण अत्यंत दुष्कर है। जब हम भारत के इतिहास के विभिन्न पौराणिक एवं पुरातात्विक संदर्भों को देखते हैं तो इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि नेपाल भी सांस्कृतिक भारत का अंग रहा है। लगभग 3-4 शताब्दी पूर्व तक नेपाल सामाजिक सांस्कृतिक रूप से अंग, बंग, कलिंग, मिथला, अवध तथा पंचनद जैसे राज्यों की तरह अविभाज्य सांस्कृतिक भारत का अभिन्न भाग था। सांस्कृतिक भारत की सीमा आज के उत्तरी अफगानिस्तान की बंक्षु नदी की घाटी (बल्ख या बाहलीक) से लेकर दक्षिण में रामेश्वर तक विस्तृत रही है। जब कि राजनैतिक भारत की सीमाएँ काल के प्रवाह में सदैव परिवर्तनशील रही हैं। वर्तमान में भारत और नेपाल दोनों सम्प्रभु और स्वतंत्र राष्ट हैं।

नेपाल और भारत शताब्दियों से एक-दूसरे के साथ सामजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, धार्मिक, और आर्थिक दृष्टियों से इस प्रकार परस्पर अनुस्यूत रहें हैं कि उनके संबंधों का केवल राजनैतिक स्तर पर मूल्यांकन करना अनुपयुक्त होगा। हिन्दी और नेपाली, दोनों भाषाओं की लिपि देवनागरी उनकी एकात्मता और अखण्डता को पुष्ट करते हैं। अष्टाध्यायी, महाभारत, महाभाष्य, वृहदसंहिता, राजतरंगीणी और कौटिल्य के अर्थशास्त्र आदि ग्रंथ नेपाल की संस्कृति के बहुत से अन्तसूत्रों को उद्दघाटित करते हैं। हरिषेण की प्रयागप्रशस्ति, अश्वघोषकृत वज्रसूची, आचार्य मैत्रेय की प्रज्ञा पारमिता टीका, चन्द्रकीर्ति की महामायूरी, भिक्षुजिन रक्षित की सुभद्रावदान, अचार्य शनिदेव कृत बोधि चर्यावतार, संस्कृत भाषा के आठ ठीमी, भूमिदान, देवपाटन नागेश्वर, मंगल बाजान पाटन एवं पशुपति रत्नेश्वर स्थापना दान क्षेत्राभिलेख शाडर भूमि भावन अभिलेख आदि नेपाल भारत के प्राचीन सम्बन्धों पर प्रकाश डालते हैं। रामकथा एवं कृष्ण कथा ने भारत और नेपाल के नागरिकों को समान रूप से प्रभावित और अभिप्रेरित किया है। ध र्म और आस्था के समान प्रतीकों से भारत और नेपाल की धार्मिक भावना न केवल एकात्म है अपितु समाजिक सांस्कृति गतिविधियाँ भी कहीं न कहीं एक ही मूल से नि:सृत प्रतीत होती हैं।

नेपाल शब्द की व्युत्पत्ति के संबंध में यह लोकोक्ति है कि द्वापर काल में महान संत 'नेम' के नाम पर इस देश का नाम नेपाल पड़ा संत नेत ने वाद्यमती एवं कशवती (विष्णुमती) के संगम स्थल पर तपस्या की थी। हिन्दू पुराकाल के सभी लेख इस बात का समर्थन करते हैं कि नेपाल की घाटी परम्य में एक विस्तृत झील थी जो कालांतर में वाद्यमती के दोनों तटों के मध्य सीमित हो गई। 18वीं शताब्दी तक नेपाल लगभग 100 से भी अधिक राजाओं द्वारा शासित था। सन् 1769 तक नेपाल अपेक्षाकृत छोटे-छोटे चार राज्यों तथा- काठमाण्डू, पट्टन, भटगंग, गोरखा में विभक्त था। 1742 में पृथ्वी नारायण शाह मंगोलों को पराजित कर गोरखा शासक बने और अपने राज्यों का विस्तार करने लगे। ध ीर-धीरे छोटे-छोटे राज्यों को हराकर इन्होंने वर्तमान भारत के कुछ क्षेत्रों यथा- तराई, कुमायूँ गढ़वाल शिमला आदि पर अपना अधि कार प्राप्त कर लिया। पृथ्वी नारायण के विरोधी कुछ शासकों ने ईस्ट इण्या कम्पनी से सहयोग की याचना की फलस्वरूप कैप्टन किनलोच के नेतृत्व में कम्पनी की सेना को भेजा गया, किन्तु वह सफल नहीं रहा। 1769 में गोराख नरेश पृथ्वी नारायण शाह ने विरोधियों को परास्त कर सम्पूर्ण नेपाल को संगठित किया और आधुनिक नेपाल के निर्माण की नींव रखी।

भारत चीन के बारे में तत्कालीन राजनैतिक परिस्थितियों को इंगित करते हुए इन्होंने कहा कि ''हमारा देश एक कन्द (तारूल) की तरह है, जो कि दो चट्टानों के बीच उगा है, चीनी साम्राज्य के साथ हमें दोस्ताना सम्बंध अवश्य बनाए रखना चाहिए और दक्षिण समुन्द्र के शासक भारत (आंग्रेजी राज) के साथ भी हमें अच्छे सम्बंध बनाए रखना होगा।'' तब से लेकर आज तक सम्प्रभु देश भारत और नेपाल मैत्री संबंध का निर्वाह करते आ रहे हैं।

नेपाल की भौगोलिक स्थिति भारत की सुरक्षा के लिए एक प्राकृतिक आवदान है। नेपोलियन बोनार्पाट ने अन्तर्राष्टीय संदर्भ में भागौलिक कारकों की भूमिका को रेखांकित करते हुए कहा था कि ''एक देश की विदेश नीति उसको भूगोल द्वारा निर्धारित होती है। नेपाल की भू-राजनैतिक स्थिति भारत के लिए निश्चिंतता प्रदान करने वाली है। यही कारण है कि भारत और नेपाल की लगभग 1850 कि0मी0 लम्बी सीमा बिना किसी बाढ़ या अवरोध के, सीमेन्ट या कंक्रीट के प्रतीकात्मक खम्भों से निर्दिष्ट है। भारत के उत्तरी सीमा पर स्थिति हिमालय सदा से उत्तरी आक्रमण के लिए प्राकृतिक अवरोध उत्पन्न करता रहा है। सुरक्षात्मक दृष्टि से भारत नेपाल मैत्री के लिए खुले हैं। दोनों देश के नागरिक बिना किसी पारगमन पत्रके आ-जाकर व्यापार आदि कर सकते हैं।

चीन के माओत्सेतुंग ने अपने दक्षिणवर्ती देशों-तिब्बत, भूटान, लद्दाख सिक्किम तथा नेफा (अरूणांचल प्रदेश) को ध्यान रखते हुए फाईव फिंगर की थ्योरी दी थी। चीन अपनी सुरक्षा एवं प्रभुत्व विस्तार के लिए, इन देशों को प्रभावित करता रहा है।

शीतयुद्धोत्तर विश्व में चीन की बढ़ती शक्ति ने हिमालय क्षेत्र के भू-राजनीतिक स्थिति को परिवर्तित कर दिया है। सन् 1950 में चीन ने तिब्बत को हस्तगत कर लिया।

नेफा और सिक्किम भारतीय राज्य के अन्तर्गत आ चुके हैं तथा भूटान भारत का संरक्षित देश है। इसलिए नेपाल को माध्यम बनाकर चीन हिमालय की इस तलहटी में अपने प्रभुत्व को बढ़ाने की कोशिश में है। प्राकृतिक अवरोध के कारण सुरक्षा के मामले में उत्तर से निश्चिंत रहा भारत अब अपनी इस सीमा के प्रति चिंतित होने लगा है क्योंकि उत्तर के बहुत सारे दर्रे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष चीन के प्रभुत्व एवं प्रभाव में आ चुके हैं। भारत-चीन सीमा पर स्थिति कुटी एवं केरांग दर्रा चीन के नियंत्रण मे है। (12/14) तिब्बत की चुम्बी घाटी में चीन अपनी सशक्त सैन्य शक्ति एकत्रित कर चुका है। नेपाल तिब्बत की सीमा से भारतीय गंगा के मैदानी भागों में सहजता से चीन के प्रवेश की संभावना, भारत के लिए सुरक्षा की दृष्टि से गम्भीर चिंता का विषय है। हिमांचल प्रदेश की उत्तरी सीमा पर स्थित शिपकी दर्रा का प्राचीन व्यापार मार्ग चीनियों के द्वारा आधुनीकीकृत किया जा चुका है। काराकोरम पर्वत श्रेणी में आठ महत्वपूर्ण दर्रे ऐसे हैं जिनसे सिकियांग जुड़ा है। लद्दाख के ऊपर सिकियांग के साथ पूर्व दिशा में तिब्बत के साथ जुड़े लगभग 10 महत्वपूर्ण दर्रे चीन के प्रत्यक्ष नियंत्रण में हैं। वर्तमान तिब्बत अच्छी प्रकार से चीन के साथ आवागमन के मार्ग से जुड़ा है। चीन और तिब्बत गैस-पाईपलाइन से जुड़ गए हैं।

इन घटनाओं से नेपाल भारत के लिए सामरिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण राज्य बन गया है। भारत और नेपाल के सम्बंध आत्मीय रहे हैं। किन्तु चीन की राजनयिक नीतियों, पाकिस्तान की आई0 एस0 आई0 द्वारा भारत के विरुद्ध आतंकवादी गतिविधियाँ चलाने के लिए काठमाण्डू को ट्रांजिट पॉइन्ट के रूप में अपनाना (212), नेपाल की तरफ से भारत में अनवरत हो रही बंगलादेशी घुसपैठ, भारत नेपाल सीमा पर नो मेन्स लैण्ड के आस-पास सुनियोजित तरीके से बढ़ रहे मदरसे और उनसे चल रहे आपराधिक एवं आतंकवादी गतिविधियों के सबूत तथा नेपाली सीमा से देश में हो रही नकली नोटों की आमद की बरामदगी एवं नेपाल के राजनैतिक जीवन में बढ़ रहे माओवाद एवं चीन का उसको समर्थन आदि ने भारत की सुरक्षात्मक चिंताओं को बहुत बढ़ा दिया है। यह देश जहाँ पहले से ही पूरब पश्चिम और दक्षिण के सीमाओं की तरफ से चिंतित रहा, वही उत्तर में नेपाल की भारत विरोधी आसन्न गतिविधियाँ नई चिंता का विषय है। अब सुरक्षा की दृष्टि से भारत की उत्तरी सीमा भी महरूम नहीं रही, दूसरी तरफ सन् 2006 तक दुनिया में बचा एकमात्र हिन्दू देश नेपाल सम्प्रति राजनैतिक अस्थिरता का शिकार है और वह राजनीतिक आन्तरिक खतरों से संघर्षरत है। इसका पड़ोसी भारत एक स्थायी और दुनिया का बड़ा लोकतंत्र है इसलिए अपने पड़ोसी देश में घट रही राजनैतिक अस्थिरता के प्रति उसकी जिम्मेदारी भी अधिक है। भारत और नेपाल के बीच हितों का बहुत टकराव नहीं है, उनकी पारस्परिक निर्भरता अधिक है। अतएव इन दोनों के मध्य राजनैतिक संबंध प्रगाढ़ होने चाहिए। पड़ोसी देश नेपाल की राजनैतिक उथल-पुथल के प्रति भारत की चिंता स्वाभाविक है।

चीन की आथिक नीतियाँ नेपाल के प्रति चिरस्थायी नहीं है। जनसांख्यिकी के बदलते प्रतिरूप तथा प्रभुत्ववादी और तानाशाही रवैये के करण वैश्वीकरण के इस युग में चीन की स्थितियाँ और नियत साफ नहीं है। भारत और नेपाल का सौहार्दपूर्ण मैत्री संबंध दोनों देशो के हितों के अनुकूल है। नेपाल अराजक माओवाद की राजनीति का शिकार होकर और अधिक अस्थिर हो सकता है, जो नेपाल के लिए और अधिक संकटपूर्ण हो गया है। भारत-चीन नेपाल की समस्याएँ सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक न होकर वस्तुतः यह आर्थिक हितों का संघर्ष है।

भारत नेपाल संबंधों की संवेदनशीलता को देखते हुए इनके सामाजिक सांस्कृतिक संबंधों और पारस्परिक निर्भरता के क्षेत्रों के अन्तःसूत्रों को प्रकाश में लाने के लिए आकादमिक जगत का ध्यान इस ओर आकर्षित करना आज अत्यंत आवश्यक हो गया है। इन बिंदुओ को ध्यान में रखते हुए शोध संचयन के अकादमिक परिवार ने इस विषय पर विशेषांक प्रकाशित करने का निर्णय लिया। भारत नेपाल संबंधों के सजग प्रहरी गोरक्षपीठ के प्रति हार्दिक साधुवाद कि उन्होने संक्रांति के इस समय में ''21वीं शताब्दी में भारत नेपाल संबंध चुनोतियाँ एवं विकल्प'' विषय पर महाराणा प्रताप महाविद्यालय जंगलधूसड़ में अकादमिक बहस को प्रस्तुत किया।

डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह
प्रधान संपादक